धर्म जीवन

वार्षिक चन्दा रु. 50/-

नवम्बर 2007

महा यज्ञ और पूजनीय भगवान देवात्मा का जन्मोत्सव निकट आ रहा है।

विशुद्ध परोपकारी और स्वार्थ परायण मनुष्यों के जीवन में अंतर।

देवात्मा के प्रति पूर्ण वफादारी।

ईर्षा भाव के कई रंग और रूप।

आप आकाश को छू सकते हैं।

हिम्मत हो तो ऐसी

शुभ संग्राम

महा यज्ञ और पूजनीय भगवान देवात्मा का जन्मोत्सव निकट आ रहा है।

परम पूजनीय भगवान देवात्मा के सम्बन्ध में पाठ और विचार के दिन 25 - 11 - 2007 से आरम्भ हो रहे हैं। महोत्सव मुबारक 22 - 12 - 2007 से लेकर 25 - 12 - 2007 तक मनाया जाएगा, जिसका प्रोग्राम हर वर्ष की तरह अलग भेजा जाएगा।

यह जन्महोत्सव संसार - भर की सर्व - श्रेष्ठ घटना है जिसमें सारे संसार का कल्याण निहित है। अधिकारी आत्माओं के लिये आत्मिक - कल्याण का यह स्वर्ण अवसर है। जीवन - दाता के प्रति श्रद्धा और कृतज्ञता प्रकट कर के और हानि - परिशोध के साधनों में से गुज़र कर सौभाग्यवान् आत्मा अपना - अपना कल्याण साधन कर सकेंगे।

इन मुबारिक - दिनों में पावन - ग्रन्थों का पाठ हो, भजनों का, देव - स्तोत्र का और देव - आरती का श्रद्धा - पूर्वक गान हो। रोज़ाना निज के साधन हों, साधन - कापियां लिखी जाएं। अधिकारी - आत्माओं को मिला जाए। प्रचार केन्द्रों पर विशेष संग्राम हो। आत्माओं को इस पावन - अवसर से लाभ उठाने के लिये तैयार किया जाये। चारों तरफ भगवान देवात्मा की महिमा का बख़ान हो। साथियो! चारों तरफ एक धूम मचा दो।

जन्मोत्सव पर आने की, अभी से तैयारी शुरू की जाए। नए वस्त्र सिलाए जाएं। इस अवसर पर भेंट आदि देने की विशेष तैयारियां की जाएं। बच्चों को घटनाएं और भजन याद कराए जाएं। जिनको कहीं से छुट्टी लेनी हो, उसका अभी से प्रबन्ध किया जाए।

हम सब का एक तजुरबा है कि इस अवसर पर जो यहां दान मिलता है, वह आने वाले सारे साल में अपना असर दिखाता है। और इस पावन - अवसर पर शामिल होना हमारी पाक प्रतिज्ञा भी है। साथियो! आज के हालात हम से यह मांग करते हैं कि हम अपने - अपने जीवनों की उन्नत करें। इस समय यह सबसे बड़ी चुनौती है। इस अवसर की सफलता हमारे इस लक्ष्य में भी बहुत सहायक होगी। इस अवसर की सफलता पर सारे संसार की काया - कल्प निर्भर करती है।

आप के साथी अभी से नाना प्रकार की तैयारियों में डट गए है और हर कुर्बानी करके इस अवसर को सफल करने को दृढ़ संकल्प हैं। हमारी संगीत - पार्टी अलग तैयारी में लगी है। बच्चे गुरु महिमा के गीत तैयार कर रहे है। हर तरफ एक पाक नज़ारा है। एक पाक जोश है। एक नई क्रान्ति है।

एक से बढ़कर एक नजारा होगा। शानदार धर्मग्रन्थ छापे जा रहे हैं। अनेकों नई पुस्तकें आप की सेवा में पेश की जांएगी। विशेषांक विशेष - तैयारियों से तैयार किये जा रहे हैं।

सभाओं का तो क्या बताएं। एक से बढ़कर एक होगी। सत्गुरु के आर्विभाव, उनके पाक सम्बन्ध, उनके अद्वित्तीय - त्यागों और कारज का वर्णन होगा। पब्लिक - लैक्चर होंगे। संगीत सभा होगी। बच्चों की सभा होगी और नाना दूसरे प्रोग्राम होंगे। प्रात: सूरज निकलने के समय कीर्तन होगा। बैण्ड - बाजा होगा। शुभ - कामना होगी और भी बहुत कुछ होगा।
वक्त आने पर बता देंगे, हम तुम्हें ऐ मेहर - बान।
हम अभी से क्या बतायें, क्या हमारे दिल में है।
आओ! प्रण करें, महोत्सव पर जरूर चलना है। औरों को भी तैयार करो। हर तरफ एक ही आवाज हो।
"चलो - चलो गुरु के जन्म - महोत्सव पर।"

धर्म जीवन

खण्ड 19 अंक 11
नवम्बर 2007
वार्षिक मूल्य 50 रुपये

सम्पादक
डा. विनोद खेड़ा

सह सम्पादिका
सुरजीत बराड़

विशुद्ध परोपकारी और स्वार्थ परायण मनुष्यों के जीवन में अंतर

जैसे विष या मिट्टी खाने से मनुष्य का शारीरिक स्वास्थ्य बिगड़ता है और दूध फल आदि के ठीक सेवन से वह बेहतर बनता है, वैसे ही स्वार्थपर्ता का जीवन व्यतीत करने से मनुष्य का आत्मिक जीवन बिगड़ता और नष्ट होता है और विविध संबंधों में कई प्रकार से निष्काम सेवाकारी बनने से उसका जीवन उसकी अपनी योग्यता के अनुसार बेहतर बनता और उन्नत होता है। इस विषय में भगवान देवात्मा के दो वचन नीचे दिए जाते हैं-

नेचर का यह अटल नियम है जो मनुष्य स्वार्थी या स्वार्थ परायण होते हैं, वह नेचर के विकास के अटल नियम के अनुसार दिनों-दिन आत्मिक पतन की ओर जाते हैं।

तुम इस तत्व को अच्छी तरह जानों और पहचानों कि तुम्हारे आत्मा की रक्षा और उन्नति औरों की निष्काम भलाई पर निर्भर करती है।

उपरोक्त दोनों वचन बहुत अच्छी तरह इस सच्चाई को प्रगट करते हैं कि मनुष्य के लिए स्वार्थपर्ता का जीवन पतनकारी और विनाशकारी है और निष्काम भलाई का जीवन विकासकारी और कल्याणकारी है।

क्या भौतिक जगत, क्या उद्भिद जगत, क्या पशु जगत और क्या मनुष्य जगत के घटिया और बढ़िया दर्जे के अस्तित्व अपने-अपने रूप और अपने-अपने फलों से उपरोक्त सच्चाईयों को डंके की चोट से प्रगट कर रहे हैं?

नेचर में स्वार्थी और विशुद्ध परोपकारी जनों के जीवन में जो अलग-अलग प्रकार के कई लक्षण या फल पैदा होते हैं, उनमें से कुछ लक्षण या फल नीचे दिए जाते हैं।

(1) प्रत्येक मनुष्य स्वभावत: सुख का प्रबल आकांक्षी है और दुख से घबराता है। परन्तु स्वार्थ परायण मनुष्य के लिए बहुत बड़ी कठिनाई यह है कि वह अपने किसी सेवा के बदले जो सुख चाहता है, उसके बदले वह धन, मान, इज्जत व पद आदि की आकांक्षा करता है, वह सब कुछ औरों के हाथ में है। उसकी खुशी का सामान अधिकतर उसके अपने अस्तित्व से बाहर के सामानों और बाहर के अस्तित्वों में है और उसका वह सुख उनके चले जाने, पत्नी या संतान के मर जाने, किसी पद के छिन जाने, किसी की ओर से

अपमानित होने से नष्ट हो जाता है। परन्तु इसके विरूद्ध जिस मनुष्य को दूसरों की निष्काम सेवा या भलाई में सुख मिलता है, उसका सुख उसके बाहर के जनों के हाथ में नहीं है, बल्कि उसके अपने आत्मा के भीतर ही है। श्रद्धा, कृतज्ञता, दुख निवारण या अभाव निवारण आदि सात्विक भावों से परिचालित होकर जो जन किसी की भलाई करता है, उसके बदले में वह सुख लाभ करने के लिए किसी और अस्तित्व का मोहताज नहीं है, बल्कि उसके सुख का सामान उसके अपने अन्दर ही है। इसी प्रकार स्वार्थ परायण मनुष्य के दुख का सामान उसके अपने अन्दर है और निष्काम सेवाकारी मनुष्य के दुख का सामान अधिकतर और नीच आत्माओं के व्यवहार में है। जो स्वार्थ परायण मनुष्य ईर्ष्या या घमंड या मोह या क्रोध के कारण दुख पा रहा है, उसे कोई दूसरा मनुष्य चाहे कुछ भी तकलीफ न दे तो भी अपनी ऐसी बुरी प्रकृति के कारण अपने आप में स्वयं दुखी रहेगा और उस दुख से अपनी जीवनीशक्ति का नाश करता रहेगा। वह अकेला होकर भी उच्च शांति लाभ नहीं कर सकेगा और उसके विरूद्ध जो जन निष्काम सेवाकारी है, वह स्थूल शरीर छोड़ने पर नीच आत्माओं की पहुंच से ऊपर चला जाएगा और इसलिए उनके बुरे बर्तावों के दुख से सुरक्षित हो जाएगा। ऐसी अवस्था में वह अपने उच्च भावों के कारण बहुत उच्च शांति कि अवस्था में रहेगा। स्वार्थ परायण मनुष्य के सुख का सामान अधिकतर औरों के हाथ में है और निष्काम सेवाकारी जन के सुख का सामान अधिकतर उसके अपने ही हाथ में है और दुख का सामान औरों के अन्दर है कि जिस दुख से वह समय आने पर नीच आत्माओं से जुदाई की हालत में अवश्य मोक्ष पा सकता है।

(2) प्रत्येक मनुष्य जीना चाहता है और मरना नहीं चाहता, परन्तु स्वार्थी मनुष्य नेचर के जीवन विषयक नियम के विरूद्ध जाने के कारण अपनी उक्त जीने की आकांक्षा को ठीक तरह पूरा नहीं कर सकता और वह स्वभाविक आयु से पहले ही इस दुनिया में या अगली दुनिया में मर जाता है। निष्काम सेवाकारी मनुष्य नेचर के जीवन विषयक नियम को पूरा करने के कारण अधिक काल तक जीने के योग्य बन जाता है। ऐसा जन यदि किसी कारण से इस दुनियां में जल्दी अपने स्थूल शरीर को छोड़ने को मजबूर हो तो उसके बाद सिवाय किसी विशेष दुर्घटना के उच्च प्रकार का सूक्ष्म शरीर लाभ करके चिरकाल तक जीने के योग्य बन जाता है।

(3) स्वार्थी मनुष्य के जीवन का दायरा बहुत तंग होता है और निष्काम सेवाकारी जन के जीवन का बहुत अधिक होता है। जो जन औरों को हानि पहुंचाकर जीना चाहता है, उसे जहां कहीं अपने से अधिक शक्तिशाली अस्तित्वों से वास्ता पड़े, वहां पर वह उसे खत्म कर डालेंगे और ऐसा अस्तित्व मरने के बाद किसी अच्छे लोक में नहीं जा सकेगा और उसके जीवन का क्षेत्र दिनों-दिन तंग होता जाएगा और आखिरकार वह इसी हालत में चलते-चलते बिना आई मौत का शिकार हो जाएगा। परन्तु इसके विरूद्ध जो मनुष्य निष्काम सेवाकारी होता है, उसके लिए क्या इस दुनियां में और क्या अगली दुनिया में सेवा के लिए जो क्षेत्र होता है, वह बहुत बड़ा और असीम होता है। संतान अनुरागी के लिए जन सीमित हैं कि जिनकी सेवा करके वह जीना चाहता है और उनके न रहने से उसकी सेवा और क्षेत्र का सामान समाप्त हो जाता है, परन्तु दूसरे की निष्काम उच्च सेवा करने के आकांक्षी जन के लिए ऐसे जन प्रत्येक स्थान पर वर्तमान हैं कि जिनकी सेवा करके वह जीता रह सकता है।

(4) स्वार्थी मनुष्य अपने आत्मिक जीवन के विचार से दिनों-दिन अधिक से अधिक रोगी, पागल, दुखिया और दुर्बल होता चला जाता है और आखिरकार अपने व्यक्तिगत अस्तित्व के विचार से पूर्णत: खत्म हो जाता है। परन्तु परोपकारी जन दिनों-दिन अधिक से अधिक जोर्तिमान, सुन्दर और बलवान, इसलिए श्रेष्ठ सुखों का भागी होता चला जाता है और अधिक से अधिक देर तक जीने के योग्य हो जाता है।

(5) स्वार्थी मनुष्य मरने के बाद ऐसे जनों में जाकर रहने का अवसर पाता है कि जो उसकी तरह स्वार्थी होते हैं, इसलिए ऐसी अवस्था में वह वहां अपने नीच भावों की आग में जलता रहता है, वहां दूसरे नीच अस्तित्वों के भयानक बुरे व्यवहारों से भी कई प्रकार के अनुचित दुख पाता रहता है। निष्काम सेवाकारी जन मरने के बाद ऐसे मनुष्यों में जाकर वास करने का अधिकारी होता है कि जो परोपकारी होते हैं और इसलिए ऐसा मनुष्य अपने उच्च जीवन की अमूल्य बरकतों से मालामाल होता है, वहां औरों के श्रेष्ठ जीवन के उच्च व्यवहारों से भी बहुत बड़ा लाभ उठाता है।

(6) स्वार्थी मनुष्य इस दुनियां में एक ऐसा बुरा दृष्टांत छोड़ जाता है जो क्या उसके निकट के संबंधियों और क्या अन्य जनों की तबाही में सहायक होता है और परोपकारी जन ऐसा दृष्टांत छोड़ जाता है जो क्या उसके संबंधियों और क्या अन्य जनों की भलाई में सहायक बनता है और इस प्रकार स्वार्थी मनुष्य को मरने के बाद औरों की ओर से बुरी आशीष मिलती रहती है और परोपकारी जन को शुभ आशीष।

(7) स्वार्थी जैसे और किसी जन का सच्चा शुभचिंतक नहीं होता और नहीं हो सकता, वैसे ही अपना भी शुभचिंतक नहीं होता और नहीं हो सकता, किन्तु वह जैसे औरों का दुश्मन होता है, वैसे ही अपना भी शत्रु होता है, परन्तु इसके विरूद्ध निष्काम सेवाकारी जन जैसे औरों का भला चाहता है और करता है वैसे ही अपना भी भला चाहता और करता है। अनेक अवस्थाओं में वह अपने शत्रुओं के लिए भी हितकारी प्रमाणित होता है, जबकि इसके विरूद्ध स्वार्थी मनुष्य अनेक अवस्थाओं में अपने उपकारियों को भी हानि पहुंचाने से नहीं रुकता।

(8) जहां स्वार्थी मनुष्य को अपने मरने के समय कई प्रकार के अनुचित दुख उठाने पड़ते हैं और शोक से हाथ मलने पड़ते हैं, वहां परोपकारी जन को ऐसे दुख नहीं उठाने पड़ते बल्कि वह शांति के साथ इस अधम दुनियां को छोड़कर किसी उच्च लोक में जाता है।

तब प्रिय पाठकगण! आप देखें कि स्वार्थी और विशुद्ध परोपकारी जनों के जीवनों के नतीजों में कितना जमीन-आसमान का अन्तर है। जो जन इस सच्चे अन्तर को भगवान देवात्मा की देवज्योति में देखने की योग्यता रखते हों, उनके लिए इस बात की नितांत आवश्यकता है कि वह यदि अभी तक स्वार्थपर्ता का जीवन व्यतीत करते हैं, तो वह शीघ्र स्वार्थ परायण अवस्था से उद्धार लाभ करें और विशुद्ध परोपकार अनुरागी बनने के लिए सच्चा फिकर और संग्राम करें और समय रहते-रहते परोपकार के जीवन की उच्च अवस्था को लाभ करके और भगवान देवात्मा के साथ उन्नतशील सम्बन्ध में बंध कर आत्मिक भलाई का मार्ग खोल सकें, वरना ठीक समय व्यतीत हो जाने पर उनकी कुछ पेश नहीं जाएगी और उनके लिए केवल अत्यंत हानिकारक दुखों की आग में जल-जल कर खत्म होना बाकी रह जाएगा।

सत्यदेव संवाद 11 जून 1940

देवात्मा के प्रति पूर्ण वफादारी

देवात्मा के 42वें जन्म दिन पर उनके सेवकों ने जो एड्रेस उनकी सेवा में पेश की थी, उसके उत्तर में भगवान देवात्मा ने बहुत हितकर उपदेश प्रदान किया था। उन्होंने अपने मिशन के विषय में इस प्रकार फरमाया था।

मैंने अपने जीवन को कशमकश और युद्ध की चीज़ समझा है और युद्ध सदा विरोधी शक्तियों में होता है। एक प्रकार का लक्ष्य रखने वालों और उस पर चलने वालों के साथ युद्ध सम्भव नहीं। जिस नेचर ने मुझे युद्ध के लिए चुना था और तैयार किया था, उसके प्रबंध के अनुसार मुझे यह युद्ध का जीवन नसीब हुआ। यह पिछले 10 साल जिस प्रकार के युद्ध और भयानक रूहानी युद्ध में गुजरे हैं और इन सालों के अन्दर मेरा आत्मा जिन-जिन घटनाओं के अन्दर से गुजरा है, उन हालात को मेरे अतिरिक्त और कोई नहीं समझ सकता और महसूस कर सकता। वह बताने की चीज़ नहीं, महसूस करने की चीज़ है। मेरे हालात को वहीं महसूस कर सकता है, जो मेरे जैसी प्रकृति रखता हो। मेरी अपनी प्रकृति विशेष है इसलिए उन लोगों ने भी कि जिन्होंने मेरे जीवन के साथ जुड़कर कुछ न कुछ उच्च परिवर्तन लाभ किया है, मुझे बिल्कुल नहीं पहचाना। मेरे दिल और रूह की हालत हो महसूस नहीं किया। इसमें शक नहीं कि भीतर के दुखों और तकलीफों को बाहर की आंखों से देखा जा सकता है।

पिछले 10 साल अजीब तरह से कटे हैं, हरेक साल एक दूसरे से बढ़ चढ़कर भयानक घटनाओं मुसीबतों और तकलीफों का घर प्रमाणित हुआ है। ऐसा प्रतीत होता है कि हर साल की तरक्की के साथ इस 10वें साल में बहुत बढ़-चढ़ कर भाग लिया है। मेरी रूह और मेरा शरीर अब इस वक्त जिस हालत में पहुंचा हुआ है, उसके विचार से बार-बार यहीं प्रश्न पैदा होता है कि क्या इससे भी बढ़ चढ़ कर कोई और अजाब बाकी है कि जिसका मुंह देखना पड़ेगा। इस प्रश्न का उत्तर देना न मेरे अधिकार में है और न तुम्हारे में। इस समय मैं ऐसा महसूस करता हूँ कि जिन हालात में मैं पैदा हुआ और मुझे युद्ध करने का इस मुल्क में अवसर मिला है, उसमें मेरी पोजीशन यक्ता है और रूह के लिहाज से मैं जिस वातावरण में घिरा रहा हूँ और जिन लोगों से मेरा सम्बन्ध रहा है और तो कुछ आज तक मुझ पर असर होता रहा है और मुझे अपने जीवन का लक्ष्य और मिशन के सैकड़ों अंगों में जितना चिंताशील रहना पड़ा है, जितना इस मिशन का मुझ पर बोझा रहा है उसके उठान में मैं अब तक किसी गायबी प्रबंध के सहारे कायम रहा हूं। मैं इस वक्त अच्छी तरह महसूस करता हूं कि इन 10 सालों के लगातार ज़ख्मों और बेबसी की हालत में से गुजरने के कारण मैं बिल्कुल चकनाचूर हो गया हूं। पिछले कुछ महीनों से मैं जिस प्रकार की उलझनों में फंसा हूँ, उन उलझनों से किस प्रकार मेरा छुटकारा होगा उसका मुझे कोई पता नहीं। मैं इस हालत में सब्र और धीरज और जो कुछ पवित्र रोशनी प्राप्त है, उसके अनुसार कोशिश और कशमकश करना अपना कर्त्तव्य समझता हूं।

ओह! देवात्मा अपने सर्वोच्च मिशन की सिद्धि के लिए किस प्रकार के असहाय कष्टों में गुजरते रहे हैं। इससे आगे भगवान फरमाते है-यदि मैं अपने विशेष उद्देश्य और मिशन के लिए सच्चा रहा हूं, यदि

मैंने मक्कारी का साथ देने वालों और सांसारिक और पिशाचत के तरफदारों की प्रवाह न करके अपने मिशन के उद्देश्य के अनुसार देवत्व के लाने और उसकी विजय के लिए पिशाचत के साथ युद्ध किया है, पिशाचत पर हमला किया है और पूरे जोर के साथ हमला किया है और पिशाचत के तरफदारों के जो बुरे सलूक अपने ऊपर लिए हैं और यह सब कुछ इसलिए ऊपर लिया है कि यदि वह सब पिशाचत की तरफदारी के लिए हैं तो मैं देवत्व की तरफदारी के लिए अपना लक्ष्य समझता हूं। इस युद्ध में मेरे शरीर के लिए कदम-कदम पर अजाब हैं। यह सब इसलिए कि उनका भला हो और उनमें देवत्व की वो जान आ सकती है कि जिसके आने से वो रूहानी बरकतें पा सकते हैं। यदि मैं इन कुल देवत्व की बरकतों के लिए इस अजाब को अपने ऊपर लेने के लिए तैयार न हूं तो और फिर कौन तैयार हो सकता है?

दुख और कष्ट बहुत अस्वभाविक चीज है। कोई मनुष्य इसे एक दिन के लिए भी अपने लिए उचित नहीं समझता। लोग अपने निजी आराम और लाभ को मुख रखकर अपने बच्चों और रिश्तेदारों के साथ भी बुरा सलूक करने से परहेज नहीं करते। यदि किसी के दिल और दिमाग हो तो मेरी प्रकृति का अंदाजा कर सकता है कि जिसके द्वारा मैंने एक दो दिन नहीं एक दो महीनें नहीं, बल्कि इस पिशाचत और देवत्व के युद्ध में पिछले 10 साल के अन्दर क्या कुछ कष्ट और दुख प्राप्त किया है और इन दुखों की हालत में यह ख्याल गुजरा है कि मैंने तो किसी और का हक नहीं छीना, बल्कि अपने जीवन को किसी और के लिए खर्च किया है। परन्तु हाय! जितना अधिक से अधिक इस देवत्व के रास्ते में पिशाचत के साथ युद्ध किया है और लगातार अपनी शक्तियों को खर्च किया है, उतना ही मैं लगातार कष्टों में से गुजरा हूं, यदि मेरे अन्दर विशेष प्रकृति न होती तो मेरे लिए कब मुमकिन था कि मैं एक साल, दो साल नहीं, बल्कि 10 साल तक जिन लोगों से यह सब कष्ट मिला है, उनकी भलाई के लिए यह सब काम करना अपने जीवन के लिए लक्ष्य रखता है।

मेरे जीवन के असरों को अवश्य तुमने महसूस किया है और इन असरों के अनुसार अपनी चालढाल और अपने जीवन में परिवर्तन बोध किया है और कई जनों ने अपने जीवनों को भेंट करके जितना सच्चा अपने आप को प्रमाणित किया है वह एक दूसरा पहलू है जिसको देखकर मैं समझ सकता हूं कि मेरा यह 10 साल का युद्ध और पिछला सारा कष्ट जिसको मैंने अपने सिर पर बर्दाशत किया है, खाली नहीं गया। इस समय तक मेरे जीवन के असर से प्रभावित होकर जो सेवक और प्रचारक पुकारे जाते हैं, उनके जीवन इस बात की शहादत देते हैं कि मैंने इस युद्ध में विजय प्राप्त की है। इस विजय के जीवित चिन्ह तुम सबकी रूहों में वर्तमान हैं। मेरे अन्दर एक-एक ऐसा बोध वर्तमान है जिसके विरूद्ध किसी घटना के पैदा होने से जो चोट लगती है, उसका सिलसिला मेरे लिए इतना लम्बा और कष्टदायक प्रमाणित होता है कि मैं उसे सहन करने के लिए एक-एक बार ताब नहीं ला सकता और अपना कलेजा थाम कर रह जाता हूं और यह सोचना शुरू करता हूं कि क्या मेरे जीवन के लिए कोई ऐसा दिन होगा कि जब मैं ऐसे लोगों से घिरा रहूंगा कि जहां इस प्रकार के दुख और कष्ट का पैदा होना सम्भव न रहेगा। मैं इसको असम्भव नहीं समझता। मैं यह दृश्य देखता हूं कि जिसमें मनुष्य सच्चे अर्थो में एक दूसरे के लिए वफादार और भरोसे की चीज प्रमाणित हों। ऐसे दिन का लाना और ऐसी रूहों का पैदा

करना और मुलक को उभारना और उसकी बरकतों को दुनिया के और हिस्से में पहुँचा मैं अपने मिशन का विशेष उपद्देश्य समझता हूँ। मैं इस दुनिया में स्वर्ग चाहता हूँ। मैं इस दुनिया में वह दीन व धर्म लाना चाहता हूं कि जो इस दुनिया में सब प्रकार के पाप और बुराई को नष्ट करता हो और दुनिया में ऐसे मीठे सच्चे और भरोसे के योग्य सम्बन्ध पैदा करता हो जिनके पैदा होने से मानव जीवन प्रत्येक अंग में मीठा बन सकता है और मनुष्यों को ऐसे चरित्र के दर्जे में ढालता है कि जिससे प्रत्येक मनुष्य दूसरे मनुष्य के लिए बहुत हितकर और स्वर्गीय प्रमाणित हो। यदि इस प्रकार के आत्मा पैदा हों तो इससे मेरे मिशन का उद्देश्य पूरा होता है। जिन लोगों ने अपनी नीच प्रकृति के साथी बनकर इस पवित्र मिशन को हानि पहुंचाई है और सबसे बढ़कर कृतघ्नता का दृश्य दिखाया है, वह बहुत कष्टदायक है।

याद रखें कि बागी रूहों की बगावत और कृतघनों की कृतघ्नता ने मेरे मिशन के दुश्मनों में यह विचार पैदा कर दिया है कि अब इस मिशन का अंत हो गया। मेरे मिशन को अपना मिशन समझ कर मेरी तरह युद्ध करना तुम्हारे लिए नितांत आवश्यक है। युद्ध में पीठ दिखा पीछे मुड़ना अपने को गारत करना है, वैसे ही अपने ऐसे दृष्टांत से और हजारों जनों को बर्बाद करना है। युद्ध में स्थिर रहकर और आगे कदम बढ़ाकर चाहे वह कदम छोटा ही है और आगे बढ़ो की पुकार रखकर मरना एक उच्च दृष्टांत का प्रमाण देना है। यह शारीरिक जीवन कुछ दिनों का है। इस थोड़े से दिनों के जीवन को यदि तुम इस राह की कठिनाईयों को देखकर पिशाचत का साथ देकर बचना चाहो और इस मिशन से बागी होकर बचना चाहो तो इससे बढ़कर मानवता का दुश्मन और कोई नहीं हो सकता। मैं आशा करता हूँ कि तुम अपनी जिम्मेदारी को समझ कर इस समय जो आत्मसमर्पण करने के लिए तैयार हुए हो, उसे सच्चा प्रमाणित करोगे। जहां एक ओर मिशन के दुश्मन हंसते है और खुश होकर कहते हैं कि इस मिशन का ख़ात्मा हो चुका है, वहां तुम यह प्रमाणित करोगे कि उनका हंसना और खुश होना व्यर्थ है। याद रखो जो किसी उच्च मिशन के लिए सच्चा और वफादार रहते हैं वह कभी गारत नहीं होते, बल्कि इस सच्चाई को प्रमाणित करते हैं कि सच्चे गुरू का बालका मरे न मारा जाए। ऐसा हो कि तुम अपने आप को ऐसा ही प्रमाणित करें।

इस उपदेश में भगवान ने अपने कष्टों और दुखों का ब्यान किया है उन्होंने इस सच्चाई को जाहिर किया है कि जो उनके साथ अनुराग सूत्र में बंध जाएगा और सच्चाई कि बिना पर उनके मिशन की सिद्धि में अपना सब कुछ अर्पण कर देगा, वो नेचर की विकासकारी शक्तियों की उच्च सहायता प्राप्त करेगा।

सूचना

धर्म जीवन सम्बंधी हर प्रकार की जानकारी के लिए, चंदा आदि भेजने , कोई मैटर आदि भेजने के लिए साथ लिखे पते पर सम्पर्क करें या लिखें। :-

श्रीमान बलदेव सिंह जी,
House No. 3154, Sector 21-D,
Chandigarh - 160 022
Phone : 0172 - 4638229, 2716914

ईर्षा भाव के कई रंग और रूप

मेरे अपने मकान में एक बिजली का ऐसा बल्ब लगा हुआ है, कि जिस की रोशनी एक आम गली में जाती है। उस गली के छोटे-छोटे लड़के इस रोशनी में खेलते रहते हैं। अगर बिजली जलाने में देर हो जाए, तो दरवाज़ा खटखटाते हैं और कहते हैं, कि बिजली जलाओ, हम खेलेंगे। दो चार दिल हुए मैं मकान में बैठा हुआ था, कि एक लड़के ने दरवाज़ा खटखटाया, मैंने दरवाज़ा खोला, तो एक लड़का खड़ा था, उस की उमर मुशकिल से आठ-नौ वर्ष की थी, मेरी हैरानी की हद न रही, कि जब उसने कहा कि आप बिजली बुझा दें। मैंने पूछा अरे लड़के! बिजली क्यों बुझा दूं। क्या तुम खेलोगे नहीं? वह मुझे कहने लगा कि मेरे साथी आए नहीं हैं, और गली के अन्य लड़के खेलने के लिए आए हैं, आप बिजली बुझा दें तो वह खेल न सकेंगे। मैंने बिजली तो क्या बुझानी थी, परन्तु मुझे इस बात से दुख अवश्य हुआ, कि इस छोटे से लड़के के भीतर भी इस छोटी सी उमर में ईर्षा भाव का कैसा दुखदाई प्रकाश! किसी और का सुख देखकर बरदाश्त नहीं होता।

इस बार शिक्षा विभाग में बहुत अच्छा पद रखने वाली एक स्त्री हम सबको मिलने के लिए आई, बातों-बातों में कहने लगी, कि आप सुन कर हैरान रहेंगे, मेरी पालतु बिल्ली ने मेरे ऊपर हमला किया। अपना बाजू खोलकर उस ने दिखाया, कि जिस पर बिल्ली के दांतों और नाखुनों के निशान वर्तमान थे। इस की कहानी उस ने इस तरह ब्यान की, कि उस ने बहुत लाड और प्यार से बिल्ली पाली थी, और उस को अपने साथ सुलाती थी, और खाने के समय अपने साथ बिठा कर खिलाती थी। उस ने एक बहुत अच्छा कुत्ता अपनी रक्षा के लिए रख लिया। जब से उस ने कुत्ते को प्यार करना आरम्भ किया, तब से बिल्ली का बर्ताव बदलना आरम्भ हुआ। एक दिन जब वह अपने ड्रांइगरूम में गई, तब बिल्ली ने छलांग मार कर उस के बाजू को दांतों और पंजों से पकड़ लिया, उस के बाद उस ने बिल्ली को औरों के हवाले करके अपने से सदा के लिए अलग कर दिया। एक पशु के भीतर ईषा भाव का कैसा भयानक प्रकाश!

एक बार मेरे पास कालिज में काम करने वाला एक मेहतर आया, मैंने अपने आफिस के बाबू को यह कहना था, कि उस को एक कमीज़ बनवा कर दे दे। मुझे आकर कहने लगा, कि आपने बाबू को मेरे लिए कमीज़ बनवाने के लिए कहा था, उन्होंने मुझे कमीज़ बनवा कर नहीं दी। परन्तु एक बाहर का आदमी जो मेहतर है और मेरा अजीज़ है, और मेरे पास मेहमान है, उस को बाबू ने पांच रूपए निकाल कर दे दिए। मैंने पूछा कि तुमने देखा, उस ने तत्काल कहा, कि हाँ जी मैंने अपनी आंखों से देखा। मैंने कहा कि तुम्हें यह पता लगा कि बाबू जी ने उसे क्यों पांच रूपये दिए। वह कहने लगा कि मेरे उस अज़ीज की आखें खराब थी और उस को दवाई के लिए पांच रूपए दिए। मैंने कहा कि फिर तुम्हें इस में क्या दिक्कत मालूम देती है? वह जन तुम्हारा मित्र था। मेहमान था, बीमार था, तो वह कहने लगा कि यह मुझ से बरदाशत नहीं

होता, कि मुझे तो कुछ न मिले और उसको पांच रूपये मिलें। मैंने उस को कहा कि तुम्हें कमीज़ मिल जाएगी, तुम्हें उस से क्या गर्ज़ है। कहने लगा, कि उस को पांच रूपये क्यों दिए गए? हकीकत यह थी, कि यह पांच रूपए उस बीमार मेहतर के ही थे। इस को बखशीश कोई नहीं दी थी। ईर्षा परायण जन सब सुख और नफा अपने लिए चाहता है, और दूसरे के लिए न सुख चाहता है न नफा चाहता है।

कुछ दिन हुए एक खौफनाक घटना हुई, जिस ने शहर में सनसनी उत्पन्न कर दी। अचानक एक बच्चा गुम हो गया, वह बच्चा माता पिता का एक ही लड़का था, उस की लाश तीन दिन के बाद एक कूएं से निकली, वह कुंआ उस बच्चे के घर से बहुत दूर था और बच्चा वहां पहुंच ही नहीं सकता था, बच्चे के गुम होने की रिपोर्ट पुलिस में हो चुकी थी पुलिस ने इस बच्चे के चाचे और चाची को पकड़ लिया, पब्लिक को यह यकीन हो चुका था, कि इस बच्चे को उस के रिश्ते में चाचा ने ही मारा था। आम अफवाह यह थी, कि इस बच्चे को मार कर उस स्त्री ने उस की लाश को अलमारी में बन्द करके रक्खा और चार बजे प्रात: काल उस की लाश को लेकर वह स्त्री दूर के कुएं में फैंक आई। कहा जाता है, कि इस स्त्री के तीन चार लड़के थे, उस से यह बरदाशत न हो सका, कि इस की जिठानी के एक भी लड़का हो। और अपनी जिठानी के घर के एक ही चिराग को गुल करके उस के घर में अन्धेरा कर दिया, और उस में खुशी लाभ की। ईर्षा का कैसा भयानक प्रकाश!

भारत के इतिहास में एक मुसलमान बादशाह के एक वजीर की कथा आती है, वह वज़ीर जहां एक तरफ बहुत योग्य था, वहां दूसरी तरफ अपने मालिक के लिए बहुत वफादार था, उस ने उस राज्य को अपनी योग्यता से चोटी पर पहुंचाया। इस वज़ीर की शोहरत बहुत बढ़ने लगी, उस राज्य के कई राज्य कर्मचारी ईर्षा से भर गए। खुद काबलियत न रख कर उस योग्य वज़ीर का रुतबा छीनना चाहते थे, उस राज का नवाब कान का बहुत कच्चा था। उस को सच्चे वाकयात भी कोई अपील नहीं कर सकते थे। बहुत सारे राज कर्मचारियों ने उस के पास बारी-बारी से पहुंच कर उस निहायत ही वफादार और योग्य वज़ीर के विरूद्ध आन्दोलन आरम्भ किया। कान का कच्चा और अभागा नवाब उन शरारती जनों की साजश को समझ न सका। अपने इस वफादार वज़ीर को पद से अलग करके उस को जेल में डाल दिया, और आखिरकार उस को फांसी दे दी। मरने के समय उस का अपने बेगुनाह और राज के सच्चे हितैषी ने दर्दनाक आवाज में यह कहा, कि मैं तो बूढ़ा हूं, मैंने तो मरना ही था, परन्तु दुर्भाग्य हैं यह राज कि जो अयोग्य और कमीने जनों के हाथों में आ गया और इस राजा की तबाही का दरवाज़ा खुल गया। ऐसा ही हुआ, कि उस वफादार और योग्य वजीर के मरने के बाद दुश्मनों न इस राजा को घेर लिया, और सफाहस्ती से मिटा दिया। आज तक इतिहास लिखने वाले जन इस बेगुनाह की मौत पर आंसू बहाते हैं। और न केवल उन अयोग्य और ईर्षा परायण राज कर्मचारियों पर लानत डालते हैं, बल्कि उस नवाब पर भी लानत डालते हैं, जो कान का कच्चा और मत का मूर्ख प्रमाणित हुआ। ईर्षा की जलाने वाली आग का कैसा भयानक परिणाम!

पुराने हिन्दु इतिहास में सिकन्दर आजिम

के हमले का वर्णन है। टैक्सला के हिन्दु राजा ने सिकन्दरेआजिम का स्वागत किया। अपने पास बुलाया, खिलाया, पिलाया और हर प्रकार की सहायता की। वह इसलिए कि पोरस नामी एक हिन्दु राजा था, जिस की बहुत शोहरत थी। वह शोहरत टैक्सला के राजा से बरदाशत नहीं होती थी। वह ईर्षा की आग में जलता रहता था। अपनी ताकत उस की इतनी नहीं थी, कि पोरस को नीचा दिखा सके। इसलिए दुश्मनों की मदद लेकर उसको नीचा दिखाने की ठान ली। पोरस बेशक हार गया, परन्तु सिकन्दर ने उस का सिक्का मान लिया और हिन्दु इतिहास में उस को अमर पदवी मिल गई। और टैक्सला के राजा को सदा की ज़िल्लत उठानी पड़ी। ईर्षा परायण जन का कैसा शिक्षा प्रद परिणाम।

मेरे वकालत के दिनों की एक घटना है, जो बहुत शिक्षा प्रद है। दो भाईयों ने अपनी जायदाद बांट लीं। बड़े भाई की स्त्री छोटे भाई की पारिवारिक जिन्दगी को देखकर बरदाश्त नहीं कर सकती थी। अपनी देवरानी के साथ अकसर झगड़ा करती रहती थी। एक दिन उस के मकान के ऊपर अपनी चीज़ें इस गरीब देवरानी को सताने के लिए रख दी। देवरानी गरीब स्वभाव की थी, वह लड़ नहीं सकती थी, उस ने रोकर अपने पति को बताया, कि यह मुझे तंग ही करती रहती है। इस के पति ने अपनी भरजाई को कुछ सख्त सुस्त कहा, जिस पर उस ने बहुत बुरा मनाया, और अपने पति को झूठी बातें बना कर बहुत उत्तेजित किया। वह कान का कच्चा और दुष्ट बड़ा भाई इस कदर उतेजित हो गया और अपनी पत्नी से कहा, कि जिस मकान के सम्बन्ध में झगड़ा हुआ है, वह मकान ही उन से छीन कर मैं तुम्हें दे दूंगा। उस मकान के हालात यह थे, कि उन दोनों भाईयों के बाप ने अपने पैसों से खरीदा था, परन्तु अपने बड़े बेटे के नाम पर खरीदा था। जायदाद की बांट में वह घर छोटे भाई को मिला था। बड़े भाई ने यह दावा दायर किया, कि यह मकान मेरा है और मैंने अपने पैसों से खरीदा था, और वह मुझे मिलना चाहिए। हाई कोर्ट तक यह झगड़ा चला। हाई कोर्ट ने कानून के अनुसार से वह मकान बड़े भाई को दिला दिया, छोटा भाई मेरे पास आकर बहुत रोया कि इस बड़े भाई ने हमारी जिन्दगी बहुत तलख़ कर दी, मेरी प्यारी झोंपड़ी भी छीन ली। मैंने उस को समझाया कि सेठ साहिब, मकान तो तुम से एक दिन जुदा हो ही जाना था, और नहीं तो मौत जुदा कर देती है। परन्तु तुम्हारे भाई का क्या बनेगा, जो महा अन्याय करके पाप का भागी बना? वह पिशाच प्रकृति लेकर परलोक में जाएगा। मुझे तो तुम्हारे भाई पर बहुत तरस आता है कि उसका यह लोक और परलोक भी गया, यह सच है, कि जिठानी ने ईर्षा भाव से जल कर अपने देवर देवरानी का बहुत सुखी परिवार दुखी कर दिया, परन्तु यह भी सच है, कि उस स्त्री के सम्बन्ध में बिरादरी और शहर में इस कदर घृणा उत्पन्न हो गई, कि उस के कर्मो का फल उस के मुंह में राख का एक लड्डू बन गया।

बाह्यक दुनियां में ईर्षा का भाव जहंनुम फैलाता है। इस से कई गुणा अधिक तबाही इस भाव के कारण आत्मिक जगत में आती है, यह भाव आत्मिक जीवन को जलाकर राख बना देता है।

देव समाज के कृतघ्नों में से एक महा

कृतघ्न के सम्बन्ध में आता है, कि वह अपने परम गुरू भगवान देवात्मा के सम्बन्ध में भी ईर्षा परायण हो गया, एक श्रद्वावान जन ने भगवान देवात्मा की जात के लिए हज़ारों रूपए दान देने का संकल्प किया, यह कृतघ्न जन उन दिनों देव समाज का कर्म्मचारी था। भगवान देवात्मा के श्री चरणों में पहुंच कर उस ने यह झूठ बयानी की, कि महाराज! आप के एक शिष्य ने देव समाज की सहायता के लिए इतने हजार रूपए देने का संकल्प किया है। असल बात वह थी, उस ने देव समाज के लिए नहीं बल्कि भगवान देवात्मा की जात के लिए दिया था, इस ईर्षा परायण जन से यह बरदाश्त न हुआ, कि भगवान देवात्मा की जात के लिए भी कोई इतनी बड़े रकम दान दे दे। उस दानी पुरूष को जाकर इस ईर्षा परायण ने कहा, कि श्रीमान जी! भगवान देवात्मा ने अपनी जात के लिए आप का दान लेना अस्वीकार कर दिया है। अर्थात् वह चाहते हैं, कि वह सारा रुपया देव समाज की सहायता के लिए जावे। वर्षों तक पूजनीय भगवान और उन के कई शिष्यों से यह राज छिपा रहा। जब वह ईर्षा परायण जन देव समाज से निकाला गया, और देव समाज का विरोधी बन गया, तब यह राज इतफाक से खुल गया। (उसकी स्वार्थपर्ता वा ईर्षा ने यह खेल रचा, क्योंकि देव समाज के लिए मिला दान किसी भी स्थान पर खर्चा जा सकता था, परन्तु भगवान देवात्मा की जात के लिए मिला दान, उनकी जात पर यह उनके आदेशानुसार ही खर्चा जा सकता था।)

ईर्षा के खौफनाक भाव की कैसी भयानक लीला! कोई हस्ती भी ईर्षा भाव से सलामत नहीं रह सकती। कबीर साहिब का यह दोहा हम सब को बार-बार स्मरण रखना चाहिए, कि

"कंचन तजना सहज है,
सहज तृया का नेह;
मान बड़ाई ईर्षा
दुर्लभ तजनी यह।"

यदि मनुष्य के आत्मिक जीवन को कोई भाव जला कर राख कर देंगे, तो वह मान बड़ाई और ईर्षा के भाव हैं। देव समाज के सेवकों और कर्मचारियों में दायानतदारी का भाव किसी सीमा तक उत्पन्न हो गया है, और स्त्रियों के सम्बन्ध में पवित्रता का भाव उत्पन्न हो गया है, वह मुबारिक है। धन का पूर्ण त्यागी होकर भी और बाल ब्रह्मचारी होकर भी धर्म जीवन के विचार से कोई सलामत नहीं, जब तक उसके हृदय में ईर्षा की आग जलती है, और मान बड़ाई का भूत मौजूद है। अगर देव समाज उभरेगी तो विशुद्ध परोपकार के भावों से भरे हुए जनों के जीवन से और अगर देव समाज की बहुत बड़ी हानि होगी, तो ऐसे जनों के जीवन से होगी, जो ईर्षा परायण हों और मान बड़ाई के दास हों। भगवान देवात्मा ने भी यही फरमाया है, कि चार प्रकार के नीच भाव धर्म जीवन को जलाकर राख बना देते हैं। वह भाव यह हैं :-

स्वार्थ, घमंड, स्वेच्छाचारिता और नीच घृणा। मान बड़ाई और ईर्षा के भाव इन चार सांपों के बच्चे ही हैं। काश! कि देव समाज कभी ऐसे जनों के हवाले न हो जावे, कि जिन के हृदय में इन सांपों का राज हो।

आप आकाश को छू सकते हैं।

यह एक मामूली घरेलु नौकरानी की कथा है, जो जिन्दगी से थक हार कर बैठने वाली नहीं थी। यह कहानी है 33 वर्षीय बेबी हाल्दार की।

बेबी हालदार लिखती हैं :- छोटी उमर में शादी हो गई। पति के हाथों रोज़ पिटना मेरी किस्मत बन चुकी थी। पड़ोस की अपनी हमदर्द सहेलियों को मिलने पर भी मेरी पिटाई होती थी। कारण यह था कि उन्होंने अपने पतियों के अत्याचारों से तंग होकर उन्हें छोड़ दिया था। परन्तु वह मेरे साथ सहानुभूति रखती थी, मेरे दुख सुख की साथी थी। एक दिन जब उनसे बात करते मेरे पति ने देखा, तो उसका अंहकार बेकाबू हो गया, मेरे सिर पर पत्थर मारा, जिससे खून बहने लगा। अक्सर हम गरीब औरतों को मार खाने की इतनी आदत हो जाती है, कि उसे अपनी किस्मत समझकर सहने लगती हैं।

मैं उन औरतों में से नहीं थी। मैंने अपनी मां को पिटते देखा था। पड़ोस में एक पति ने पीट-पीट कर पत्नी को जान से मार दिया। मैंने घर छोड़ने का फैसला कर लिया। तीन बच्चों को लेकर घर से निकल पड़ी, उनको अच्छी जिन्दगी देना चाहती थी। बिना सोचे गाड़ी में बैठ गई और दिल्ली पहुंच गई। सातवीं तक पढ़ी थी। लोगों के घरों में काम ढूंढा पर ऐसा लगता था कि यह अमीर लोग इंसान को इंसान ही नहीं समझते। कई दफा निराशा इतनी होती कि दिल करता कि गाँव लौट जाऊं। मेहनत से काम करती रही। सभी से मिन्नतें की कि मेरे बच्चों को किसी स्कूल में भरती करवा दें, परन्तु किसी ने नहीं सुनी।

मेरे एक जानकार ने कहा कि एक लैक्चरर के घर काम करोगी, मैंने 'हां' कर दी। यह सज्जन प्रबोध कुमार थे। (श्री प्रेमचन्द जी प्रसिद्ध लेखक के बंशज) वह सारा दिन किताबें पढ़ते रहते। मैं घर का सारा काम करती। उन्हें मेरा काम पसन्द आया। उनके घर में एक कमरा था, जिसमें बहुत सी किताबें थी। मैंने सफाई करते हुए देखा कि उसमें बंगला भाषा की किताबें थी। मैंने एक बांग्ला की किताब निकाली और पन्ने पलटने लगी। अचानक प्रबोध कुमार जी वहां आ गए, और पूछने लगे कि "क्या तुम्हें पढ़ना लिखना आता है?" मैंने कहा कि केवल बांग्ला पढ़ना आता है और मैंने झट किताब रैक में रख दी।

अगले दिन उन्होंने मुझे कमरे में बुलाया, मैं डर गई, परन्तु उन्होंने मुझे तस्लीमा नसरीन की "आभार मेये बेला" नामक पुस्तक पढ़ने को दी। उन्होंने मेरा उत्साह बढ़ाया और कहा कि "पढ़ने की कोई उमर नहीं होती, मैं अब तक पढ़ता हूँ।" मैं दिन भर काम करके देर रात तक पढ़ती रहती। फिर मैंने बहुत से लेखकों की किताबें पढ़ी।

एक दिन बाबू जी ने कापी और पेन्सिल मेरे सामने लाकर रख दी, कहने लगे, 'लिखो' मैंने कहा कि मैं क्या लिखूँ। उन्होंने कहा कुछ भी, ऐसा करो तुम अपनी कहानी लिखो। मैं चुपचाप कापी और पैन लेकर घर चली गई। रात को लिखने बैठी, तो ऐसा लगा कि मैं तो सब कुछ भूल गई हूँ। लिखकर काटती रही। आखिर सोचा कि यह मेरे

जीवन की कहानी है, गल्तियां होंगी तो क्या है। फिर मैंने अपनी जिन्दगी की वह घटनाएं लिखनी शुरू की, जो मेरे जीवन में घटी थी। मां के साथ बाप का दुव्यवहार, पीटना और आखिर घर से निकाल देना, कुछ दिनों में दूसरी शादी कर लेना। 11 वर्ष की उमर में मेरी शादी बड़ी उमर के आदमी से कर देना। 12 वर्ष की उमर में मेरा मां बनना और फिर और दो बच्चों को जन्म देना। लिखते समय दुखदाई घटनाओं को याद करके आंसू बहाती थी। फिर क्या था घर के काम करते-करते जब भी कोई घटना याद आती तो मैं लिखती जाती। कई महीने लिखती गई, आख़िर मेरे जीवन की कहानी पूरी हो गई।

सबसे पहले बाबू जी ने मेरी कहानी पढ़ी और उन्होंने मेरा माथा चूमा और कहा, "तुमने बहुत अच्छा लिखा है।" उन्होंने मेरी कहानी अपने एक दोस्त को भेजी। कुछ दिनों बाद उन्होंने बताया कि उनके दोस्त को मेरी कहानी बहुत अच्छी लगी है। उन्होंने मेरी वह कहानी किताब के रूप में छाप दी, परन्तु मुझे लगा कि मेरी कहानी कोई क्यों पढ़ेगा? लेकिन लोगों ने मेरी कहानी को पढ़ा। यह बात मुझे आज तक समझ नहीं आई कि लोग ज्ञान बांटने की कोशिश क्यों नहीं करते? बाबू जी की मदद से मुझे यह पहचान मिली। हर व्यक्ति बाबू प्रबोध कुमार जी जैसा क्यों नहीं होता।

किताब का नाम 'आलो अन्धेरी' रखा गया। एक बार तो किताब देखकर मुझे यकीन ही नहीं हुआ कि मैंने यह किताब लिखी है। मैंने यह किताब साहित्यिक पुरस्कार के लिए नहीं लिखी थी। जब बाबू जी मेरे जीवन के बारे में पूछते, तो मैं बताती, तो वह समझ गए कि मेरी जिन्दगी में कुछ खास है। उनकी प्रेरणा से मैं लिखती चली गई।

इस कहानी लिखने से मेरी जिन्दगी ही बदल गई। जो कल तक एक नौकर के सिवा कुछ भी नहीं थी। आज लेखिका के रूप में जानी जाने लगी हूँ। मेरी किताब का अंग्रेजी अनुवाद "A life less ordinary" जो बेस्ट सैलर की सूची में शामिल हुआ। प्रिंट और Electric Media मेरे साथ साक्षातकार को दौड़ पड़ा। इनकी कहानी से प्रभावित होकर लंडन में फिल्म मेकिंग की पढ़ाई कर रहे एक विद्यार्थी ने बेबी पर एक डाक्युमैंटरी बनाई। आज उस कहानी को पर्दे पर उतारने के लिए कई प्रोड्यूसर वा निर्देशक उतावले हैं। विदेशी मीडिया में अर्थात् न्यूयार्क टाईमज़, International हेराल्ड ट्रिब्यून और क्रिश्चन सांईस मानीटर ने भी कहानी को छापा।

बेबी हाल्दार ने इस किताब के अंग्रेजी अनुवाद के साथ जयपुर हैरीटेज इंटरनैशनल फैसटीवल में शिरक्त की। 12 मार्च से 21 मार्च तक चले The man Hongkong international literary festival में भी उन्होंने अपनी उपस्थिति दर्ज करवाई। हाल ही में उन्होंने अपनी दूसरी किताब का काम भी पूरा कर लिया है।

घरों में काम करने वाली साधारण नौकरानी में हीरे की खोज प्रबोध कुमार जी ने की।

आगे बेबी हाल्दार लिखती हैं :-

मेरी किताब मेरी पिता ने पढ़ी, बहुत खुश हुए, बावजूद इसके कि मैंने उनके अत्याचारों के विषय में लिखा था। घर में कोई रिश्तेदार आता है, तो वह किताब दिखाते हैं, मेरे घर जाने पर खास मेहमान की तरह मेरा ख्याल रखते है। कहते हैं, "मैंने तुझे कुछ नहीं दिया, तुमने नाम कमाया है,

तुम लिखती रहो ताकि मेरे जैसे माता पिता बच्चों के साथ वह न करें, जो मैं तुम्हारे साथ किया है। अगर मैं बीते दिनों में लौट सकूं, तो मैं तुम्हारे और तुम्हारी मां के साथ किए बुरे बर्ताव को ठीक करना चाहूँगा।"

पहले बच्चों से टीचर पूछती कि मैं क्या करती हूं, तो वह शर्माते, अब वह गर्व से बताते हैं।

मेरे पति ने भी यह किताब पढ़ी, वह भी खुश हुए, अपनी गल्तियों के लिए क्षमा मांगी। मैंने सबको क्षमा कर दिया, जिन्होंने नहीं मांगी, उनको भी। मुझे लगता है कि यदि वह मेरे साथ ऐसा बर्ताव न करते, तो आज मैं जो हूं वह न बन सकती।

आज मैं बहुत खुश हूं, मेरे पास सब कुछ है, पर अफसोस यह है कि मां नहीं जो देख सकती, उनकी कृपा से ही मैं सातवीं तक पढ़ सकी, दुखी होकर भी उन्होंने मेरा स्कूल जाना बन्द नहीं किया। पढ़ने के कारण ही यह सब सम्भव हो सका। मैं उनकी सदा एहसानमन्द रहूंगी।

अब मेरा यह सपना है कि मैं और लिख सकूं और बच्चों को कुछ बना सकूं।

आजकल मेरी 10 साल की बेटी मेरी अंग्रेजी टीचर है। विदेशी लोगों से बात नहीं कर सकती, तो बुरा लगता है, सो अंग्रेजी सीख रही हूं।

अगली किताब मेरे लिखने के दौर के बाद के जो बदलाव आए उसकी कहानी है।

नोट :- कितने सौभाग्यवान हैं वह जन, जिन्हें ऐसा सम्पर्क मिल जाए और उनके भीतर अन्याय को न सहने का बल पैदा कर दे।

आत्म कल्याण का उपाय

एक व्यक्ति संत सुकरात के पास पहुंचा। वह गन्दे पकड़े पहने हुए था। उसके सिर तथा दाढ़ी वा बाल अस्त-वयस्त थे। उसके कपड़ों और शरीर से दुर्गन्ध आ रही थी। उसने सुकरात से विनम्रता के साथ कहा मुझे आत्म-कल्याण का रास्ता सुझाएं। सकुरात ने कहा, पहले तुम अपने कपड़ों को धोकर साफ करो। शरीर को शुद्ध करो। बालों को ठीक करो। फिर मेरे पास आना। यह आत्म-कल्याण का पहला पाठ है।

वह लौट गया। दूसरे दिन नहा-धोकर बाल कटवाकर स्वच्छ कपड़े पहनकर वह सुकरात के पास पहुंचा। उसने आक्रोश भरे शब्दों में कहा 'कल आपने मुझे आंतरिक शान्ति का उपाय बताने की जगह मेरे बाहरी रूप को और मेरे गंदे कपड़ों को बदलने का आग्रह किया। कपड़ों और स्वच्छता से आत्म-कल्याण का आखिर क्या संबंध है?

सुकरात बोले, तुम्हारे हृदय के क्षोम एवं आक्रोश को मैं देख रहा हूं। यह भली प्रकार समझ लो कि स्वच्छता, सौन्दर्य तथा व्यवस्था की भावना का विकास हुए बिना कोई व्यक्ति आत्मा की अनुभूति कदापि नहीं कर सकता। कोई भी फूहड़, आलसी, निराश और क्रोधी व्यक्ति आंतरिक शान्ति प्राप्त नहीं कर सकता। आन्तरिक, शान्ति की प्राप्ति के लिए क्रोध, स्वार्थ, लोभ आदि दुर्गुणों से मुक्त होना होगा।

हिम्मत हो तो ऐसी

मशहुर गायक अदनान सामी जो खतरनाक हद तक मोटापे का शिकार हो गए थे। उन्होंने बहुत हिम्मत और बेहद मेहनत करके अपना वजन 220 किलो ग्राम से घटाकर 90 किलो ग्राम कर लिया है। अर्थात् उन्होंने अपना वजन 1 क्वि. 30 किलो ग्राम घटा लिया है। वजन घटाने का सफर बेशक बहुत मुश्किल था। मगर अब वह उसके परिणाम को बहुत प्यार करते हैं।

अदनान सामी अब सबका धन्यवाद करते थकते नही हैं, वह खुशी-खुशी अपना फोटो खिचवाने के लिए पोज में खड़े हो जाते हैं, अब 90 किलो के हल्के अदनान जीवन के हर मिन्ट का आनन्द उठा रहे हैं।

वह कहते है, "मैं 220 किलो वजन के साथ अपने को अच्छा महसूस नहीं करता था। मैं एक पहियादार कुर्सी पर ईधर-उधर आता जाता था। वह कुर्सी खास अपने लिए बनवाई थी। मैं हवाई जहाज में अपने लिए 2 सीटें बुक करवाता था। क्योकि मैं एक सीट पर फिट नहीं आता था।

यह मुझे अच्छी तरह याद है"

अब चुस्त दुरस्त अदनान यह सब याद करके बहुत खुशी अनुभव करते हैं।

यह सब आसान नहीं था। दो बातों ने मुझे फैसला करने पर मजबूर कर दिया जिसके कारण मुझे वजन घटाना पड़ा। पहला मेरे पिता ने मुझे कहा था "मेरे लिए ये मत करो तुम अपने लिए ये करो अर्थात् अपने लिए वजन घटाओ। मैं नहीं चाहता कि किसी बाप को अपने बेटे की अर्थी उठाने में शामिल होना पड़े।"

मेरे डाक्टरों ने मुझे कहा कि तुम सिर्फ छः महीने तक जी सकते हो। ये बात मैं अपने आप को कहता था कि मैं अभी जीना चाहता हूँ, शुरू-शुरू में मुझे गिरावटों का सामना करना पड़ा, मेरा मन करता था कि मैं वो चीज़े खा लू जिन्हें खाने को मेरा मन करता था, और मैं कल से परहेज करना शुरू करूंगा। लेकिन मैंने अपने आप को रोका और अपने आप को बार-बार याद कराता रहता कि तेरे लिए ये आखिरी चान्स है।"

'ऐसी अफवाहें फैल रही थी कि मैंने ये सब कुछ एक औरत के लिए किया है, कुछ और कहते थे कि मैं अपना वजन इसलिए घटा रहा हूं कि मैं किसी फिल्म में काम करने की सोच रहा हूँ। परन्तु इनमें से कोई बात भी सच नहीं थी। मैंने ये सब कुछ जीने के लिए किया है, यही एक विशेष कारण है। मेरी मोहब्बत की जिन्दगी भी बहुत खुशियों से भर रही है। जिस लड़की को मैं जिन्दगी में सबसे ज्यादा प्यार करता था वह साफा भी मेरे पास आ गई है। ये एक नेअमत है।"

क्या वो अब किसी फिल्म में काम करने वाले हैं, इस प्रश्न के उतर में उन्होंने कहा, नहीं अभी तक किसी चीज़ ने मुझे प्रेरणा भरी उकसाहट नहीं दी। हां, जब कोई मन पसन्द फिल्म मेरे राह में आएगी तब मैं अवश्य आप लोगों को बताऊँगा।"

अब लोगों से मुबारकबाद और कम्पलीमेंन्टस उन्हें मिल रहे हैं। मुबारक और कम्पलीमेंटस किसे पसन्द नहीं?

"वास्तव में मैं उन सब जनों का शुक्रगुजार हूं जो मुझे ठीक शेप में देखने के लिए प्रेरणा देते रहे हैं, मुझे मेरी जिन्दगी वापिस मिल गई है। मैं हर रोज इसके लिए भगवान का धन्यवाद करता रहता हूँ।"

इस तब्दीली ने मुझे हर बात को को अलग ढंग से सोचने लगा दिया। मेरा आंत्मविश्वास बहुत बढ़ गया है और मैं महसूस करता हूँ कि मैं अब बहुत कुछ कर सकता हूँ।

शुभ संग्राम

पदमपुर (राजस्थान) :- 6 अक्तूबर की सुबह श्रीमान बलदेव सिंह जी यहां पहुंचे। डा. मनसा सिंह जी और अनिल जी ने बहुत सारे साथियों को सत्संग का पता दिया। रात को 9.00 बजे यहां पहली सभा रखी गई। इस में 25 - 30 जन कुछ स्त्रियों के साथ शामिल हुए। श्रीमान जी ने बताया कि संसार में बहुत सारे धर्म हैं। उनके होते मनुष्य बहुत दुखी है, बरबाद हो रहा है। इन्सान को न ईश्वर दुख देता है और न दुख दूर करता है। दुख का मुख्य कारण नीच सुखों के अनुराग और नीच घृणाएं हैं। उन्हें जानने की जरूरत है। गुरू महाराज बताते हैं, कि मनुष्य को उसके नीच सुखों के आकर्षणों को जानने की जरूरत है। इसके लिए देवात्मा की लासानी रोशनी की जरूरत है, जो उस के अन्तर आत्मा को दिखाती है, और उन्हें मिटाती है। उनकी पैदा की संगत यही काम कर रही है। सभा से लोग बहुत प्रभावित हुए। अगले दिन से रात को 8.30 बजे सुबह 9.00 बजे सभा रखी गई।

7.10.2007 सुबह फिर 9.00 बजे एक सभा की गई। इस में बताया गया कि मनुष्य को अपनी स्थूल दृष्टि से, उसे नेचर का और अपनी आत्मा का सूक्ष्म रूप दिखाई नहीं देता। मनुष्य की आत्मा को कई बड़े-बड़े चोर, डाकू चिपके हुए हैं। वो बहुत सूक्ष्म हैं और उनकी हानि भी बहुत ही सूक्ष्म है। मिथ्या, अंह, धन आदि के इश्क जैसे डाकू चिपके हुए हैं। उसका घटना सहित ब्यान किया गया। सभा काफी लाभकारी रही। कई जनों को दिन में भी मिलने के लिए कहा, वो सभी अच्छी दिलचस्पी दिखा रहे थे।

शाम को एक सभा और की गई। इसमें 20 - 25 के करीब जन आकर शामिल हुए। श्रीमान बलदेव सिंह जी ने बताया कि अभी तक इंसान को धर्म क्या चीज़ है, इस बारे में पूरा निर्णय नहीं है। अलग-अलग प्रकार के विश्वासों और धर्म साधनों को मनुष्य धर्म मानता है। जबकि धर्म केवल अच्छा बनना है। अच्छा बनने के लिए मोटे-मोटे बुरे कर्म छोड़ने पड़ेंगे। रूपये पैसे और दूसरों के सम्बन्ध में भरोसे के योग्य बनना पड़ेगा। इस तरह का बनने के लिए ईमानदार और पवित्र बनना पड़ेगा। ईमानदारी और पवित्रता की कमाई करनी होगी। बड़े और गुणवान महान जीवनों के प्रति झुकना होगा, सम्मान देना होगा। जो अपने माता-पिता, भाई-बहन, पति-पत्नी को सम्मान नहीं दे सकता, उनके आगे झुक नहीं सकता, वह धर्मवान नहीं बन सकता। गुरू महाराज नीच जीवन मिटा कर मनुष्य को उच्च बनाते हैं। सभा में अच्छा हितकर मण्डल बना और हाजरीन बहुत प्रभावित हो रहे थे।

8 अक्तूबर की सुबह एक सभा की गई। इस में बताया गया कि मनुष्य के अस्तित्व पर नेचर के नाम का राज है। जो नाम पूरा होगा, वही नतीजा निकलेगा। नेचर में असरों का जोरदार खेल जारी है। कैसे नीच असर मनुष्य जीवन का नाश करते हैं, घटना द्वारा सिद्ध किया गया। देवात्मा के प्रभाव ही

अद्भुत कारज करते हैं। कैसे वो मनुष्य का ध्यान उस के नीच जीवन की ओर करते हैं, कैसे उच्च परिवर्तन पैदा करते हैं, उस का शानदार चित्र पेश किया गया। देवात्मा के प्रभाव मनुष्य के लिए आक्सीजन का, अमृत का रूतबा रखते हैं, उनकी प्राप्ति का नियम ज्यादा से ज्यादा पूरा करके हम अपना परम हित कर सकते हैं।

शाम की सभा में 30 के करीब स्त्री-पुरूष शामिल हुए। इस में बताया गया कि पाप का राज क्या होता है, मनुष्य के हृदय में पाप शक्तियों से फैलता है। उस की तस्वीर पेश की गई। धर्म का राज धर्म शक्तियों से पैदा होता है। उसके कुछ दृश्य पेश किए गए। देवात्मा मानव हृदय से पाप का राज मिटा के धर्म का राज पैदा करते हैं और नारकी वजूद को धर्मी जीव बनाते हैं। दिन के समय कुछ लोग आ के मिलते रहे और काफी देर तक हितकर बातचीत करते रहे। सवाल पूछते रहे।

9 अक्तूबर सुबह एक सभा की गई। इस में 25 के करीब हाजरी हो गई थी। इस सभा में करामात के मिथ्या पन के बारे में विस्तार से बताया गया और सच्ची करामात नीच और पापी जीवन बदलने की होती है। देवात्मा मनुष्य के नीच जीवन को बदल-बदल कर यह करामात पैदा कर रहे हैं। उच्च परिवर्तनों को उच्च भावों से भरकर प्रस्तुत किया गया। इस के साथ बड़ा सुन्दर वातावरण पैदा हुआ। बहुत सारे हाजरीन गुरू महाराज के आगे झुकने के लिए मजबूर हो गए। कुछ 3-4 जनों ने पुस्तकें पढ़ने के लिए मांगी जो उन्हें दी गई। गजसिंह पुर से एक साथी सेवक सभा में आकर शामिल हुए।

रात की सभा में बहुत ही अच्छी हाजरी थी। कोई 35 के करीब जन आकर शामिल हुए। सभा में बताया गया कि बहुत से धर्म होने के बावजूद मनुष्य को अभी अपने सम्बन्ध में जीना नहीं आया। सम्बन्धों में जो नरक है, उसे घटनाओं द्वारा पेश किया गया। सम्बन्धों में नरक के कारण बताये गये। अहंकार, घृणा की भरमार है, सम्मान, श्रद्धा, शुक्रगुजारी, हमदर्दी की भावना की बेहद कमी है, गुरू महाराज नारकी जीवों के अन्दर उच्च भाव पैदा करके सम्बन्धों में स्वर्ग पैदा करते हैं। कंवर देविन्द्र सिंह लुखी, सावित्री सिद्धू और भी कई जनों के उदाहरण पेश किए गए। सभा में अच्छा वातावरण बन रहा था। लोग काफी प्रभावित हो रहे थे। कई जनों ने अगली सभा में शामिल होने का भरोसा दिलाया।

10 अक्तूबर सुबह की सभा यहां की आख़िरी सभा थी। इस सभा में 28-30 जन की हाजरी थी। इस में बताया गया कि मनुष्य के जीवन पर नेचर के नियम हावी हैं। नेचर का नियम है कि जो वजूद दूसरे के काम आता है, सेवा करता है, उसकी रक्षा होती है, उस का विकास होता है। वन सम्पति जगत में आक के बाग नहीं लगते, आम के बाग लगते हैं। आम की नसल का विकास होता है। गायों का विकास हो रहा है। 30 किलो दूध वाली गाय पैदा कर ली है। गायों को कोई खत्म नहीं कर सकता। शेरों को कोई बचा नहीं सकता। मानव रूह की खुराक दो चीजें है, एक है पर हित, दूसरा है उच्च प्रभाव और देव प्रभाव। दूसरों की सेवा उच्च

भावों से करके, हमारी रूह को सकून मिलता है। अपनी उपकारी हस्तीयों की सेवा न करके मनुष्य खुदगरज़, कमीना और पापी बनता है। सेवा के बिना मनुष्य जीती-जागती लाश है। धरती पर बोझ है। सेवा उच्च भाव से करो, देवात्मा के प्रभाव में आओ, आपका संभव हित होगा।

यह सभा बहुत प्रभावशाली सिद्ध हुई। सब हाजरीन बहुत अच्छा महसूस कर रहे थे। धन्यवाद से भर रहे थे। बार-बार संगत लाने की मांग कर रहे थे। आख़िर में 1740 रूपये दान में प्राप्त हुए। हाजरीन को डा. मनसा सिंह जी द्वारा मिठाई दी गई। इस प्रकार यहां कुछ दिनों का सत्संग कुछ हद तक सफल रहा। कई नये नौजवानों ने आकर लाभ उठाया। कुछ एक ने उत्साह से दान दिया और किताबें पढ़नी आरम्भ की और महोत्सव में शामिल होने का उत्साह दिखाया।

डबवाली :- 10 तारीख, शाम को श्रीमान बलदेव सिंह जी और डा. मनसा सिंह जी यहां पहुंच गये। जीत सिंह जी मलेकां से पहुंच गये। रात को यहां एक सभा की गई। जिस में चार धर्म सम्बन्धी और अन्य स्त्री पुरूष शामिल हुए। इस सभा में बताया गया कि धर्म उच्च जीवन का नाम है, जो उच्च भावों से पैदा होता है। 8 पापों से बचे होना जरूरी है। उच्च भाव त्याग कराते हैं, दूसरे के काम आने को मजबूर करते हैं। जो किसी और के काम नहीं आता उसके पास धर्म नहीं है। गुरू महाराज की जय की आवाज से यह सभा समाप्त हुई।

गोनियाना मंडी :- 11 अक्तूबर को श्रीमान जी यहां पहुंच गये। रात को यहां श्रीमान ज्ञान चंद जी के पास एक सभा की गई। जिस में 15-16 जनों की हाजरी थी। श्रीमान बलबहादुर सिंह जी भी कल्याण से समयानुसार यहां पहुंच गए। इस सभा में बताया गया कि हमारे जीवन की सारी लीला सम्बन्धियों के सम्बन्ध पर ही निर्भर करती है। अच्छे सम्बन्धी के सम्बन्ध से उचित सुखों की प्राप्ति होती है। विद्वान के सम्बन्ध से विद्या की कदर जागती है। कसरत करने वाले सम्बन्धी के सम्बन्ध से अच्छी सेहत और लंबी उमर प्राप्त होती है। धनवान के सम्बन्ध से धन, सियासदान के सम्पर्क से सियासत मिलती है, मान सम्मान मिलता है। सभी सम्बन्धों को सुन्दर उदाहरण द्वारा स्पष्ट किया गया। देवात्मा के सम्बन्ध द्वारा जो हित के द्वार खुल जाते हैं उसका भी ब्यान किया गया।

12 अक्तूबर 8.30 बजे सवेरे सभा की गई। जिस में श्रीमान जी ने बताया कि हर पिता यह चाहता है कि उसका बेटा उसका सम्मान करें, अपमान बिल्कुल न करे। लड़ाई-झगड़ा ना करे, बुरा न बोले। हर पत्नी यही चाहती है कि उसका पति उससे बुरा बर्ताव न करे, मार-पीट, गाली-गलौच ना करे। हर भाई यही चाहता है कि उसके भाई-बहन उससे अच्छा सलूक करें। पर हकीकत यह है कि हर एक को इन इच्छाओं के प्रति निराशा ही होती है। देवात्मा के दर पर आकर जब तक मनुष्य को उपकारियों के उपकार नज़र न आयें, यह जानने का भाव पैदा न हो कि मेरे लिये उन्होंने क्या कुछ किया है, तब तक दुख और निराशा का मिलना जरूरी है। देवात्मा के दर पर आ कर जो लोगों में उच्च परिवर्तन आया है उसके

बहुत सुन्दर उदाहरण दृष्टांत बताये गये। कई लोगों के हृदय भर गये। इस अंग की कीमत हृदयों में जागती रही।

रात 8.00 बजे एक सभा रखी गई। जिस में 20 के करीब लोग आकर शामिल हुए। सभा में बताया गया कि अपना चेहरा देखने के लिए शीशा (दर्पण) है। शरीर के अन्दर की बिमारी देखने के लिए एक्सरे हैं। शरीर की अलग-अलग बिमारियों को जानने और समझने के लिए नई-नई मशीनें और टेस्ट बन चुके हैं और बन रहे हैं। लेकिन मनुष्य को अपनी कमियां, गलतीयां दिखाने के लिए कोई शीशा और टेस्ट नहीं है। धर्म की संगत, कीर्तन, पूजा-पाठ सब कुछ है। पर मनुष्य अपनी गलतीयां देखने के योग्य नहीं है। परम पूजनीय भगवान देवात्मा के देव रूप के अन्दर ऐसी ज्योति पैदा हुई है जो मनुष्य के नियम के पूरा करने पर प्राप्त होती है और वह अपनी गलतियां देखने और स्वीकार करने योग्य हो जाता है। अपने घटिया रूप को हकीकत रूप में देखने लगता है। तभी उसके सुधार की गति शुरू हो जाती है। जीवन में उच्च परिवर्तन आ जाता है। ऐसी ज्योति और तेज के असर द्वारा आये उच्च परिवर्तन के कई हृदयस्पर्शी दृष्टांत दिये गये। सेवकों को ऐसे वातावरण से बार-बार लाभ उठाने की प्रेरणा दी गई।

मनुष्य होकर किसी जन के लिए अपने अस्तित्व विशेषकर अपने आत्मा के विषय में सत्य बोध और सत्य ज्ञान करने का आकांक्षी होने से बढ़कर कोई बढ़ा अधिकार नहीं, क्योंकि उससे नीचे पशुजगत के किसी जीव को भी अपने अस्तित्व के विषय में इस प्रकार के ज्ञान लाभ करने का कोई अधिकार प्राप्त नहीं है।

देवात्मा

श्रीमान बलदेव सिंह जी, एम. ए। (लाईफ़ वर्कर) मंत्री-देव-धर्म-मिशन। प्रिंटर, पब्लिशर और मालिक "धर्म जीवन" ने ***Surya Laser Den, Chandigarh - 160022*** *से छपवाकर म. न. 3154, सैक्टर 21-डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया।*

Book Posts